International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 24-10-2025, Accepted: 25-11-2025, Published: 15-12-2025
Volume 7, Issue 2, 2025, Page No. 85-87

भोजपुरी और छत्तीसगढ़ी लोकगाथाओं को डिजिटल युग में संरक्षित और संकलित करने की आवश्यकताएं

रवि प्रकाश सूरज
शोधार्थी, स्नातकोत्तर भोजपुरी विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार, भारत

सारांश
भारतीय लोकसाहित्य की निरन्तरता मूलरूप से मौखिक परंपराओं पर टिकी हुई है। भोजपुरी और छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य भारतीय लोकसाहित्य परंपरा की सबसे सशक्त धाराओं में से एक हैं जिनमें इन क्षेत्रों की सामाजिक और सांस्कृतिक परम्पराएं जीवंत हैं। भोजपुरी और छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य की एक प्रमुख विधा लोकगाथा है। लोकगाथाएं हमारी सांस्कृतिक विरासत का एक अमिट हिस्सा हैं जो मौखिक परंपरा में पीढ़ी–दर–पीढ़ी प्रवाहित होते हुए लोककंठों में आज भी सुरक्षित हैं। आधुनिकता, शहरीकरण, बाजारवाद, मीडिया और सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव, डिजिटल युग के आगमन ने इन लोकगाथाओं के परंपरागत स्वाभाविक परिवेश को बहुत गहरे तौर पर प्रभावित किया है। जिसके परिणामस्वरूप पारंपरिक लोकगाथा गायकों, प्रदर्शन के अवसरों और मंच तीनों में तेजी से संकुचन आरंभ हुआ है। डिजिटल युग का दोहरा प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर है, जहां डिजिटल तकनीक ने एक तरफ लोकस्मृतियों के विघटन की प्रक्रिया को तेज किया है वहीं दूसरी ओर संरक्षण और संकलन की संभावनाओं के द्वार भी खोले हैं। प्रस्तुत शोध निबंध में भोजपुरी और छत्तीसगढ़ी लोकगाथाओं के संदर्भ में संरक्षण और संकलन की वास्तविक आवश्यकताएं क्या हैं और इन्हें व्यवस्थित स्वरूप में कैसे पूरा किया ज सकता है, इस पर चर्चा की गई है।

मूल शब्दः लोकगाथा, भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी, डिजिटल, संरक्षण, संकलन

प्रस्तावना
भारत एक विविधतापूर्ण और समृद्ध सांस्कृतिक विरासतों वाला देश है। भारत में अलग–अलग समुदाय सदियों से अपनी समृद्ध क्षेत्रीय पहचान, सांस्कृतिक विरासतों, रीति–रिवाजों और लोकपरंपराओं के साथ रहते आए हैं। इन समुदायों के अपने–अपने मौखिक परंपरा के लोकसाहित्य रहे हैं जिनसे भारतीय लोकसाहित्य की मौखिक परंपरा अत्यंत समृद्ध और विशाल हुई है। भोजपुरी और छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य की मौखिक परम्पराएं भारतीय लोकसाहित्य का अभिन्न हिस्सा रही हैं। दोनों भाषाओं के पास मौखिक परंपराओं से समृद्ध लोकसाहित्य का विपुल भंडार है। लोकसाहित्य की एक प्रमुख विधा लोकगाथा है जिसे 'कथागीत' अथवा 'गीत कथा' भी कहा गया है। इन लोकगाथाओं में श्रम, प्रवास, जातीय–सांस्कृतिक स्मृतियाँ, स्त्री–अनुभव, उत्सव, जन्म, रीति–रिवाज, धार्मिक मान्यताएं, संघर्ष और प्रतिरोध सब एक साथ गूँथे हुए दिखाई देते हैं। मौखिक परंपरा पर आधारित होने के कारण इनका संरक्षण और संकलन करना आवश्यक हो गया है। आधुनिकता, शहरीकरण, बाजारवाद, प्रवासन, डिजिटल प्लेटफॉर्म पर परोसे जा रहे सतही गीतों ने इसके स्वाभाविक परिवेश–गायकों, अवसरों और मंचों–को तेजी से संकुचित किया है। डिजिटल युग के आगमन के बाद इनके अस्तित्व पर खड़ा संकट और अधिक तेज हुआ है, मगर डिजिटल तकनीक ने दूसरी ओर इनके संरक्षण–संकलन के लिए अभूतपूर्व संभावनाओं के द्वार भी खोले हैं। डिजिटल तकनीकों के उपयोग से इन लोकगाथाओं को संवेदनशील और वैज्ञानिक ढंग से संकलित कर सुरक्षित करने का प्रयास किया जा सकता है।

भोजपुरी और छत्तीसगढ़ी लोकगाथाएं: सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य
भोजपुरी और छत्तीसगढ़ी दोनों भाषाओं में समान रूप से प्रचलित लोकगाथाओं का रचनाकाल मध्ययुग से प्रारंभ हुआ माना जाता है। हालांकि छत्तीसगढ़ में जनजातीय समुदाय की लोकगाथाओं का उद्भवकाल इससे पूर्व का भी हो सकता है। 'लोरिकी', 'आल्हा', 'भरथरी' और 'गोपीचन्द' की गाथाएं अपने स्वरूप और कथावस्तु में थोड़े बहुत अंतर के साथ दोनों क्षेत्रों में समान रूप से प्रचलित हैं। भोजपुरी और छत्तीसगढ़ी दोनों प्रदेशों की लोकगाथाओं में आदिम मानवीय भावनाएं, लोकआस्था, लोकविश्वास, सामाजिक जीवन, आर्थिक जीवन, राजनैतिक जीवन, और गाथाओं के नायकों के दैवत्व की अवधारणा अंतर्निहित हैं। भोजपुरी समाज ऐतिहासिक रूप से बड़े पैमाने पर प्रवास, कृषि, श्रम, सामंतवादी व्यवस्थाओं, पितृसत्तात्मक संरचनाओं से जुड़ा रहा है।[1] भोजपुरी लोकगाथाओं के शोधकर्ता इन तत्त्वों को ज्ञान के रूप में संरक्षित करते हैं। वहीं दूसरी ओर छत्तीसगढ़ी लोकगाथाओं में आदिम मानवीय भावनाएं, पौराणिक स्मृतियाँ, पर्व–त्योहार, लोकजीवन और जनजातीय समूहों की स्मृतियाँ समाहित हैं।

भोजपुरी क्षेत्र की लोकगाथाओं को संकलित और मुद्रित करने के प्रयासों में ग्रियर्सन, महादेव प्रसाद, डॉ. अर्जुनदास केसरी, डॉ. श्याम मनोहर ओझा का नाम प्रमुख है। छत्तीसगढ़ी लोकगाथाओं को संकलित और संरक्षित करने का उल्लेखनीय प्रयास वैरियर एल्विन ने बीसवीं सदी के मध्य में अपनी प्रसिद्ध कृति 'Folk–Songs of Chhattisgarh' के माध्यम से किया है।[2] आज के डिजिटल युग में आधुनिक तकनीकों का प्रयोग करते हुए यही कार्य कहीं अधिक विस्तृत और सहभागी तौर पर किया जा सकता है, अगर उसकी वैचारिक और तकनीकी तैयारी सही हो।

डिजिटल युग: संकट और संभावनाएं
डिजिटल मीडिया के आगमन के बाद लोकसंगीत के क्षेत्र में दो विरोधी प्रवृत्तियाँ पैदा हुई हैं। बाजारवाद के दबाव में 'रिमिक्स सॉन्ग', 'आइटम सॉन्ग' और फ़िल्मीकरण ने पारंपरिक रागों, गायन और वाद्य शैली को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है, वहीं दूसरी ओर स्मार्टफोन और इंटरनेट की गाँव–गाँव तक पहुँच ने सुदूर क्षेत्रों तक रिकॉर्डिंग और इसे साझा करने की सुविधा पहुंचाई है।

अदिति देव ने भारत के छोटे कस्बों में एक एथनोग्राफिक अध्ययन पूरा किया है इससे पता चलता है कि डिजिटल तकनीकों के प्रसार के साथ स्थानीय समुदायों ने अपने लिए Digital Community Archives बनाने की प्रक्रिया शुरू की है जिसमें वे अपने लोकगीतों और मौखिक परंपराओं को रिकार्ड कर

ऑनलाइन साझा कर रहे हैं।[3] ARPO का 'Lorekeepers' प्रोजेक्ट अबतक 1800 के लगभग लोककथाओं और लोकगीतों का ओपन विडिओ फोकलोर आर्काइव तैयार कर चुका है जिसमें स्मार्टफोन के जरिए समुदाय अपनी परंपराओं के दस्तावेजीकरण में स्वयं साझेदार बनते हैं।[4] भोजपुरी लोकसंस्कृति को संरक्षित करने वाला एक प्रमुख प्रोजेक्ट है 'The Bidesiya Project' जिसने मौखिक संगीत की परंपराओं के आर्काइव डिजिटल रूप में बनाए हैं।[5] 'Sahapedia' वेबसाईट पर छत्तीसगढ़ी और भोजपुरी दोनों क्षेत्रों की मौखिक परंपराओं पर सामग्री डिजिटल संस्करण में उपलब्ध हैं।

संरक्षण और संकलन की सैद्धांतिक आवश्यकताएं

डिजिटल संकलन और संरक्षण केवल रिकार्ड कर लेने की प्रक्रिया नहीं है बल्कि, एक सुनियोजित, वैज्ञानिक प्रक्रिया है।

1. **लोकगाथा को 'टेक्स्ट' नहीं, 'प्रदर्शन' समझना:** लोकवार्ता के विद्वानों का मत है कि लोकगाथाओं का मूल स्वरूप बहुविध और प्रदर्शन–केंद्रित होता है। एक ही गीत की कई रूपांतरित प्रस्तुतियाँ की जाती हैं, जो समान रूप से मान्य लोकसम्पदाएं हैं। डिजिटल संकलन के दौरान इस बहुरूपता को दर्ज करने की जरूरत होती है।

2. **समुदाय–केंद्रित अभिलेखीकरण:** लोकसाहित्य समुदाय का बौद्धिक संसाधन होता है। इसके संकलन, दस्तावेजीकरण और उपयोग में समुदायों की भागीदारी अतिआवश्यक है।

3. **संदर्भ का संरक्षण:** लोकगाथाएं केवल शब्दों और धुनों से निर्मित साहित्य नहीं है बल्कि इनके प्रदर्शन के अवसर, स्थल, गाने वाले की सामाजिक स्थिति, श्रोता समुदाय सब मिलकर एक 'Context' का निर्माण करते हैं। डिजिटल संकलन के दौरान इन संदर्भों की जानकारी मेटाडाटा के रूप में दर्ज होनी चाहिए।

4. **भाषिक और लिप्यंतरण संबंधी संवेदनशीलता:** डिजिटल दस्तावेजीकरण में देवनागरी लिपि के साथ औडियो/विडिओ को दर्ज करना, स्थानीय उच्चारणों को सम्मान देना और अंग्रेजी अनुवाद के साथ मूल पाठ को समकक्ष रखने के प्रति नितांत संवेदनशीलता की आवश्यकता है।

तकनीकी आवश्यकताएं

भोजपुरी और छत्तीसगढ़ी लोकगाथाओं के डिजिटल संरक्षण के लिए कुछ मूलभूत तकनीकी आवश्यकताएं हैं, जिन्हें संक्षेप में यहाँ प्रस्तुत किया गया है –

1. **उच्च गुणवत्ता की रिकॉर्डिंग:** पारंपरिक गायकों की आवाज, लय, कोरस और स्थानीय वाद्य यंत्रों के स्वर की उच्च गुणवत्ता वाली रिकॉर्डिंग के लिए बढ़िया माइक्रोफोन, पोर्टेबल रेकॉर्डर और न्यूनतम शोर वाले वातावरण की जरूरत होती है।

2. **ओपन और मानक फॉर्मैट:** सभी रिकॉर्डिंग को आवश्यकतानुसार WAV, FLAC, MP3/MP4 के मानक फॉर्मैटों में संरक्षित करना चाहिए।

3. **मेटाडाटा स्कीमा:** लोक कलाकारों के नाम, निवास, अवसर, तिथि, भाषा, गीत की विधा, आरंभिक पंक्ति, रिकॉर्डिंग करने वाले का नाम, कॉपीराइट आदि सही रूप में मेटाडाटा के रूप में दर्ज होना चाहिए जिससे समुदाय, कलाकारों और शोधकर्ताओं सबको लाभ पहुंचे।[6]

4. **बैकअप और सर्वर–संरचना:** IGNCA के Digital Music Archives और Archive of Indian Music आदि संस्थानों ने पुराने ग्रामोफोन रेकॉर्ड्स को डिजिटल मोड़ में संरक्षित कर लिया है तथा बैकअप डाटा क्लाउड मोड और सर्वर में सुरक्षित है। भोजपुरी और छत्तीसगढ़ी लोकगाथाओं को संग्रहित कर भविष्य के लिए सुरक्षित करने हेतु अइसे प्रयासों की आवश्यकता है।[7]

5. **ओपन–एक्सेस और उपयोगकर्ता के अनुकूल इन्टरफेस:** डिजिटल आर्काइव को बंद करके सिर्फ शोधकर्ताओं तक सीमित रखने की बजाय मोबाईल–आधारित वेबसाईट, एप्प पर भी डालने की जरूरत है ताकि समुदाय से उसका संबंध बना रहे। भोजपुरी और छत्तीसगढ़ी प्रदेशों की ज्यादातर जनसंख्या ग्रामीण है अतः इस तरीके के ओपन–एक्सेस की जरूरत है।

भोजपुरी और छत्तीसगढ़ी संदर्भ की विशिष्ट चुनौतियाँ

सामान्य तौर पर भोजपुरी और छत्तीसगढ़ी लोकगाथाओं के संकलन और संरक्षण के लिए डिजिटल आवश्यकताएं एक समान हैं पर दोनों क्षेत्रों की कुछ विशिष्ट चुनौतियाँ हैं –

1. **प्रवास और विखंडन:** भोजपुरी समाज में प्रवासन लंबे समय से रहा है और इसके परिणामस्वरूप इस समाज की एक बड़ी आबादी देश–विदेशों में निवास करती है। डिजिटल संकलन के दौरान इन अंतर्राष्ट्रीय स्वरूपों को भी दर्ज करना होगा जो पारंपरिक भौगोलिक सीमाओं से बाहर लोकस्मृति का विस्तार करते हैं।

2. **स्त्री–केंद्रित गायन:** स्त्रियों के जीवन की अभिव्यक्ति इनके द्वारा गाए गए गीतों में व्यक्त होती है।[8] डिजिटल रिकॉर्डिंग करने के दौरान इन स्त्रियों की निजता, सहमति और सुरक्षा के प्रति ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

3. **जनजातीय और दलित समूहों की लोकगाथाएं:** छत्तीसगढ़ एक जनजातीय प्रदेश है, इन समुदाय के सदस्यों के नृत्य–गीत और गाथाएं अक्सर मुख्यधारा का हिस्सा नहीं बन पाती हैं। डिजिटल संरक्षण के दौरान यह ध्यान देना जरूरी हो जाता है कि इनके स्वर भी समान महत्त्व के साथ दर्ज हों और उनकी सांस्कृतिक स्वायत्तता बनी रहे।

4. **भाषिक हीनताबोध और बाजार:** भोजपुरी और छत्तीसगढ़ी दोनों भाषाओं को लंबे समय तक 'उपभाषा' अथवा 'बोली' कहा जाता रहा है। जबकि ये दोनों स्वतंत्र भाषा की हर अर्हता पूरी करती हैं। बाजारवाद के दबाव में अश्लील और सतही गीतों को 'लोकगीत' कहकर प्रचारित किया जाता है जिससे वास्तविक लोकपरम्परा हाशिये पर चली जाती है। डिजिटल संकलन से पहले यह शोध कर लेना चाहिए कि कौन सी सामग्री वास्तविक लोकगाथा है और कौन सी बाजारू उत्पाद।

5. **कॉपीराइट और बौद्धिक संपदा:** लोकगाथाएं सामूहिक बौद्धिक संपदा हैं। सामुदायिक आर्काइव, सहभागितापूर्ण मॉडल को विकसित करके इन बौद्धिक संपदाओं के कॉपीराइट और अधिकारों के सवालों को हल किया जा सकता है।

डिजिटल संकलन के लिए कार्य–योजना

भोजपुरी और छत्तीसगढ़ी लोकगाथाओं के संरक्षण के लिए निम्न बिंदुओं पर आधारित एक प्रस्तावित कार्य–योजना बनाई जा सकती है –

1. **मैपिंग और सर्वेक्षण:** भोजपुरी और छत्तीसगढ़ी भाषी क्षेत्रों के जिलेवार मानचित्र टॉयर कर विशिष्ट लोकपरम्पराएं चिह्नित की जा सकती हैं। विश्वविद्यालयों और स्थानीय संस्थाओं के सहयोग से टीम बनाकर संकलन का कार्य पूरा किया जा सकता है।

2. **फील्ड रिकॉर्डिंग अभियान:** मौसम, त्योहार और कृषि कार्यों के अनुसार फील्डवर्क किए जाने चाहिए ताकि रिकॉर्डिंग वास्तविक संदर्भों में हो। हर रिकॉर्डिंग के साथ लिखित या औडियो सहमति लिया जाना चाहिए तथा कलाकारों को उचित पारिश्रमिक दिया जाना चाहिए।

3. **डिजिटल रीपौजिटरी का निर्माण:** क्षेत्रीय/केन्द्रीय विश्वविद्यालयों अथवा राज्य कला अकादमियों के साथ 'भोजपुरी–छत्तीसगढ़ी लोकगाथा संग्रह' पोर्टल विकसित किया जाना चाहिए। तकनीकी रूप से इस पोर्टल को ओपन–स्रोत अपर आधारित होना चाहिए जिसे दुनिया भर में डिजिटल हयूमैनिटीज़ प्रोजेक्ट्स में प्रयोग किया जाता है।

4. **समुदाय के लिए ओपन–एक्सेस:** चुने हुए औडियो/विडिओ को कम स्ट्रीमिंग के लिए सार्वजनिक तथा उच्च गुणवत्ता वाली फ़ाइलों को शोध और संरक्षण के लिए सुरक्षित किया जाना चाहिए।

5. **प्रशिक्षण और क्षमता–निर्माण:** रिकॉर्डिंग हेतु स्थानीय युवाओं को मोबाइल विडिओग्राफी, फ़ोटोग्राफी, साउन्ड रिकॉर्डिंग और डिजिटल आर्काइविंग का बुनियादी प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

6. **बहुभाषिक व्याख्या और शोध–समर्थन:** हर गीत के लिए देवनागरी लिप्यंतरण, हिन्दी/अंग्रेजी सार और संदर्भ–टिप्पणियाँ जोड़ी जानी चाहिए। इन अभिलेखों पर कार्य करने के लिए फेलोशिप और अनुदान की व्यवस्था होनी चाहिए।

डिजिटल संरक्षण से होने वाले लाभ

भोजपुरी और छत्तीसगढ़ी लोकगाथाओं के डिजिटल संरक्षण से निम्न प्रकार के लाभ हो सकते हैं –

1. **स्मृति और पहचान की रक्षा:** प्रवासी और युवासमूह जो अपने सांस्कृतिक पहचान से कटते जा रहे हैं, उन्हें ऑनलाइन आर्काइव के माध्यम से अपने सांस्कृतिक अतीत से जुड़ सकेंगे।

2. **शोध और शिक्षा:** डिजिटल आर्काइव विभिन्न संकायों के विद्यार्थियों के लिए संदर्भित सामग्री उपलब्ध कराएगा।

3. **कलाकारों और समुदायों का सशक्तिकरण:** डिजिटल पोर्टल पर कलाकारों की प्रोफाइल, संपर्क उपलब्ध होने से उनको सम्मान जनक पारिश्रमिक और प्रदर्शन के अवसर उपलब्ध हो सकेंगे।

4. **भाषा–संग्रह और मानकीकरण:** औडियो/विडिओ के साथ लिखित रूप देने से भोजपुरी और छत्तीसगढ़ी के शब्दकोश, व्याकरण, प्रलेख और इतिहास–लेखन को मजबूत आधार मिलेगा।

5. **सांस्कृतिक नीतियों के लिए डाटा:** राज्य विशेष और केंद्र की सांस्कृतिक नीतियों के निर्माण के लिए डिजिटल आर्काइव एक अच्छा स्रोत बन सकता है।

निष्कर्ष

लोकगाथाएं केवल साहित्य और प्रदर्शन की कला नहीं बल्कि समाज और संस्कृति की विभिन्न जटिलताओं को भी समझने का माध्यम हैं। मानव व्यवहार को समझने का माध्यम ये लोकगाथाएं हैं। डिजिटल युग में अगर लोकगाथाओं का संरक्षण और संकलन ना हों तो ये बाजारवाद और सोशल मीडिया के प्रभाव में आकर धीरे–धीरे विलुप्त या विकृत हो जाएंगी। लेकिन अगर इन्हीं डिजिटल तकनीकों को समुदाय–केंद्रित, संदर्भ–संवेदी और शोध–समर्थित मॉडल के साथ जोड़ा जाए तो यही तकनीक इनके दीर्घकालिक संरक्षण, पुनरुत्थान और पुनर्व्याख्या का सशक्त माध्यम बन सकती हैं। भोजपुरी और छत्तीसगढ़ी लोकगाथाओं का संरक्षण अगर तकनीक, संस्थान और समुदाय केंद्रित हों तो इनके पुनरुद्धार की कल्पना असंभव नहीं है।

संदर्भ सूची

1. Singh, Asha. "Folksongs as an Epistemic Resource: Understanding Bhojpuri Women's Articulations of Migration." Journal of Migration Affairs,2019:1(2):51–68.
2. Elwin, Verrier. Folk-Songs of Chhattisgarh. Oxford University Press, 1946.
3. Deo, Aditi. "Digital Community Archives for Vernacular Musics: Cases from India." IASA Journal,2013:41:15–20.
4. "LoreKeepers Project: ARPO Builds India's Leading Open Video Folklore Archive." ARPO Blog, 31 May 2025, accessed 10 Jan. 2026.
5. "The Bidesia Project." Bhojpuri Folk Culture Digital Initiative, accessed 10 Jan. 2026.
6. "Digital Archive – Folk Culture Archive." Folk Culture Archive, accessed 10 Jan. 2026.
7. "Digital Music Archives and Library." Indira Gandhi National Centre for the Arts, accessed 10 Jan. 2026.
8. Singh, Asha. "Folksongs as an Epistemic Resource: Understanding Bhojpuri Women's Articulations of Migration." Journal of Migration Affairs,2019:1(2):51–68.